पाठ 21

छत्तीसगढ़ का दर्शन

– लेखकगण

भारत का हृदय स्थल छत्तीसगढ़ अपनी प्राकृतिक संपदाओं और लोक–संस्कृति से समृद्ध है । 'धान का कटोरा' कहे जानेवाले इस अंचल की चेतना विकासोन्मुखी रही है । आर्य और अनार्य संस्कृतियों का संगम–स्थल होने के कारण इस क्षेत्र की ऐतिहासिक गरिमा में अभिवृद्धि होती रही । बहुमूल्य प्राकृतिक संपदाओं, खनिज पदार्थों और विशिष्ट लोक संस्कृतियों ने इस राज्य को एक विशेष स्थान दे दिया है । छत्तीसगढ़ की कला एवं सांस्कृतिक वैभव की एक संक्षिप्त झाँकी प्रस्तुत निबंध में पढ़िए ।

भारत के क्षितिज पर छत्तीसगढ़ 'धान का कटोरा', 'दक्षिण–कौशल', 'दण्डकारण्य' आदि विविध नामों से अपने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गौरव के साथ जगमगाता रहा है । इस वनाच्छादित क्षेत्र को महानदी, इंद्रावती, शिवनाथ, हसदो इत्यादि नदियाँ अपनी जलधारा से सिंचित करती हैं ।1 नवम्बर, 2000 को एक पूर्ण नए राज्य के रूप में अस्तित्व में आया छत्तीसगढ़ आज विकास की ओर अग्रसर है। 1,35,191 वर्ग किलोमीटर में फैले इस राज्य की सीमाएँ उड़ीसा,उत्तरप्रदेश, झारखंड, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र तेलांगना और मध्यप्रदेश से मिलती हैं । सन् 2001 की जनगणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या 2,07,95,956 एवं साक्षरता का प्रतिशत 65.18 है ।

छत्तीसगढ़ की गौरवशाली और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत क्षेत्रीय राजवंशों की कला और संस्कृति से जुड़ी हुई है। कलचुरी कालीन भारत की प्राचीन सांस्कृतिक परम्परा का प्रभाव यहाँ के सांस्कृतिक व सामाजिक जनजीवन पर दिखाई पड़ता है ।

प्राचीन काल से ही छत्तीसगढ़ धार्मिक गतिविधियों का केन्द्र रहा है । अंबिकापुर का मैनपाट, जिसे छत्तीसगढ़ का पचमढ़ी कहा जाता है, बिलासपुर रतनपुर का महामाया देवी मंदिर, जाँजगीर शिवरीनारायण का लक्ष्मीनारायण मंदिर और राजनाँदगाँव डोंगरगढ़ का बम्लेश्वरी देवी का मंदिर प्राचीन काल से आस्था और संस्कृति के केन्द्र रहे हैं । यहाँ के लोगों की धर्म में अटूट आस्था है । यहाँ हिन्दू, मुस्लिम,सिख, ईसाई आदि सभी धर्मों के लोग निवास करते हैं । शिव, विष्णु, दुर्गा आदि देवी–देवताओं के मंदिर भी यहाँ विद्यमान हैं । वैष्णव, शैव, शक्ति तथा विविध पंथों के धर्मावलंबियों की यहाँ प्रमुखता है ।

कबीरपंथ को अपनाने वाले कबीरपंथी कहलाए । रायपुर जिले के दामाखेड़ा एवं कबीरधाम ग्राम में कबीरपंथियों की प्रसिद्ध गद्दी है। दामाखेड़ा कबीरपंथ अनुयायियों को विशेष प्रकार की शिक्षा संस्कार देने का केन्द्र है । मठ का प्रधान गुरु और आचार्य होता है ।मठ की व्यवस्था के लिए दीवान, कोठारी, भंडारी, पुजारी होते हैं। कबीरपंथी आंतरिक शुद्धता, पवित्रता और सदाचरण को महत्व देते हैं । इस पंथ में गुरु का स्थान विशेष रहता है ।

कबीरपंथ की तरह यहाँ एक और पंथ का विकास हुआ । इसे 'सतनाम पंथ' कहा जाता है । 'सतनामी' का अर्थ है सत्यनाम को माननेवाला और उसके अनुसार आचरण करनेवाला । 'सतनामपंथ' सत्य और पवित्रता को महत्व देता है । 'सतनामपंथ' के प्रवर्त्तक 'गुरु घासीदास जी' माने जाते हैं जिनकी जन्मभूमि एवं तपोभूमि गिरौधपुरी ग्राम है । इन्होंने भी कबीर की तरह मूर्तिपूजा, जाति प्रथा का विरोध किया । इस पंथ के प्रमुख सिद्धांतों में सतनाम पर विश्वास, मूर्तिपूजा का खंडन, जातिभेद का बहिष्कार, मांस–मदिरा का निषेध विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं ।

छत्तीसगढ़ लोककला और संस्कृति की दृष्टि से अत्यंत ही समृद्ध रहा है । यहाँ का लोकजीवन उसकी संस्कृति में ही थिरकता है । यहाँ की लोकसंस्कृति में संगीत के साथ–साथ लोकगीतों और लोकनृत्यों का भी काफी महत्व है । लोकगीतों की कुछ झलक निम्नलिखित पंक्तियों में परिलक्षित हो रही हैं–

ददा मोर कहिथे कुआँ म धसि जाहूँ ,
बबा कथे लेतेंव बैराग ।
काबर ददा तें कुआँ में धसि जाबे ,
काबर बबा लेबे राग ।
बालक सुअना कस तुंहर दुलौरिन ,
झटकुन लेहु बुलाय ।

आल्हा केवल उत्तरप्रदेश में ही नहीं गाया जाता छत्तीसगढ़ में भी आल्हा गायन का खूब प्रचलन है। चौमास में यहाँ–वहाँ शहरी और ग्रामीण लोग आल्हा गाते दिखाई–सुनाई पड़ेंगे । महिलाएँ सावन में पेड़ के नीचे जाकर झूला–झूलती हैं, आनंदित होती हैं, ददरिया और भोजली सुनाती हैं ।

राखी और तीजा के त्यौहार के समय बहनें अपने भाइयों से मिलने के लिए व्याकुल रहती हैं। भाई, बहन को संदेश भेजता है कि तुम संशय(शंका) मत करना । चिंता भी मत करना । मैं तीजा की रोटियाँ लेकर, तुझे लेने आऊँगा । निम्नलिखित पंक्तियों में ये भाव कितने मार्मिक शब्दों में व्यक्त हुए हैं –

संसो तैं झन करिबे, फिकर तैं झन करिबे,
तीजा के रोटी धरिके, तोला लेबर आहूँ ओ ।

उक्त गीतों के अतिरिक्त छत्तीसगढ़ में करमा, सुआ, पंथी, डंडा, पंडवानी, राऊत नाचा, ददरिया आदि गीत

नृत्य के साथ गाए जाते हैं । छत्तीसगढ़ में संस्कार गीत, अनुष्ठान गीत, ऋतु गीत तथा धार्मिक पर्वों पर गाए जानेवाले गीतों की भी बहुलता है । पंडवानी अर्थात् पांडवों की कथा यहाँ की अमूल्य धरोहर है । छत्तीसगढ़ में फागुन महीने में लोग नगाड़ा बजाकर होली के गीत गाते और एक–दूसरे को रंग–गुलाल लगाते हैं, वहीं दूसरी ओर गाँव की रास–मंडलियाँ राधा–कृष्ण और ग्वाल–बाल का रूप धारण करके माँदर के ताल के साथ नाचते–गाते थिरकते हैं । छत्तीसगढ़ के प्रमुख लोक–वाद्यों में माँदर, ढोलक, नगाड़ा, चिकारा, मोहरी, सींगबाजा प्रमुख हैं ।

छत्तीसगढ़ की भाषा छत्तीसगढ़ी है जो पूर्वी हिन्दी की उपभाषा है । यह सरस और प्रवाहमयी तो है ही, साथ ही ब्रजभाषा की तरह मधुर भी है । यहाँ की 85% जनता यही भाषा बोलती है । इसके अतिरिक्त हिन्दी और उड़िया भाषाएँ भी यहाँ प्रचलित हैं । विभिन्न बोलियों के अन्तर्गत लरिया, सादरी, कुडुक, उराँव, सरगुजिया, गौंडी, हल्बी आदि जनमानस पर अधिकार किए हुए हैं ।

छत्तीसगढ़ में साहित्य का भी काफी महत्वपूर्ण स्थान है । हिन्दी काव्य, निबंध, कहानी आदि विधाओं में छत्तीसगढ़ के साहित्यकारों का विशेष योगदान रहा है । लोचन प्रसाद पांडेय, मुकुटधर पांडेय, माधव राव सप्रे, गजानन माधव मुक्तिबोध, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, हरि ठाकुर, सुंदरलाल शर्मा, नारायण लाल परमार, जगन्नाथ प्रसाद 'भानु', द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र', श्रीकांत वर्मा, लाला जगदलपुरी, पं. रामदयाल तिवारी, बाबू प्यारे लाल गुप्ता, पं. केदारनाथ ठाकुर इत्यादि ऐसे नाम हैं जिनकी कृतियों से हिन्दी और छत्तीसगढ़ी साहित्य की श्री वृद्धि हुई है।

स्थापत्य कला की दृष्टि से भी छत्तीसगढ़ का अपना वैभवपूर्ण व गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। छत्तीसगढ़ के प्राचीन मंदिर, दुर्ग, शिलालेख, राजमहल इत्यादि यहाँ की स्थापत्य कला के अनुपम उदाहरण हैं। यहाँ के प्राचीन मंदिरों का निर्माण गुप्तकाल और कलचुरीकाल में हुआ है।

प्राचीन मंदिरों में राजिम स्थित राजीवलोचन मंदिर अत्यंत प्रसिद्ध है। मुख्य मंदिर विस्तृत आकार के बीच में ऊँची कुर्सी पर खड़ा है और उसके चारों ओर चार छोटे मंदिर बनाए गए हैं। गर्भगृह में भगवान विष्णु की एक चतुर्भुज प्रतिमा है। उनके हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म ये चार आयुध हैं। यही प्रतिमा राजीवलोचन के नाम से प्रसिद्ध है। सिरपुर में स्थित लक्ष्मण मंदिर स्थापत्य कला की दृष्टि से छत्तीसगढ़ की धरोहर है । इसका निर्माण पांडुवंश के राज्यकाल में हुआ । कहा जाता है कि राजा शिवगुप्त की राजमाता वासटा द्वारा अपने पति की स्मृति में यह मंदिर बनवाया गया था। गर्भगृह का प्रवेश द्वार पाषाण से तथा ऊपर का शिखर पूर्णरूपेण ईंटों से बना है।

बस्तर के बारसूर में शिव जी का एक मंदिर है। यह मंदिर बत्तीस खंभों पर स्थित है। इन खंभों पर सुंदर नक्काशी की गई है। खंभों पर नाग और विभिन्न देवी–देवताओं की प्रतिमाएँ उत्कीर्ण की गई हैं। बस्तर के कुटुमसर की गुफाएँ, चित्रकोट का जल–प्रपात और दंतेश्वरी देवी का मंदिर दर्शनीय हैं। कवर्धा से लगभग 16 किलोमीटर दूर जंगल में भोरमदेव का मंदिर है जो छत्तीसगढ़ का खजुराहो के नाम से विख्यात है। इस मंदिर की कला उत्कृष्ट है। मंदिर के बाहरी भाग में विभिन्न मूर्तियाँ निर्मित हैं, उनमें अंगों की भाव–भंगिमा इस प्रकार की है कि उन्हें देखकर लोग चकित और विस्मित रह जाते हैं। मुख्य द्वार के समक्ष शिवलिंग इस बात को प्रमाणित करता है कि नागवंशी शिव के उपासक थे।

छत्तीसगढ़ की लोक–संस्कृति में तीज और पर्वों की रंग–रँगीली धारा रची–बसी है । लोक–आस्थाओं और लोक–विश्वासों से जुड़े हुए इन त्यौहारों में सर्वाधिक लोकप्रिय त्यौहार हैं–तीजा, पोरा, हरेली, अक्ती इत्यादि। तीजा त्यौहार के सिलसिले में छत्तीसगढ़ के लोग अपनी बहिन व बेटियों को उनकी ससुराल से मायके लिवा लाते हैं। इस

त्यौहार में सुहागिन स्त्रियाँ ब्रह्ममुहूर्त में उठकर विधि-विधान से भगवान शिव और पार्वती की पूजा अपने पति की दीर्घायु के लिए करती हैं। इस दिन वे अन्न, फल, दूध और जल ग्रहण नहीं करतीं अर्थात् निर्जला व्रत रखती हैं। कुँवारी कन्याएँ भी श्रेष्ठ वर की कामना से यह व्रत रखती हैं। पोला त्यौहार के दिन खेती में काम आनेवाले बैलों की पूजा होती है। हरेली के दिन हल (नागर) की पूजा की जाती है। अक्ती के दिन मिट्टी के बने गुड्डे-गुड़ियों का विवाह किया जाता है। इस दिन को विवाह के लिए अत्यंत शुभ तिथि मानते हैं। विवाह, गौना जैसे मांगलिक कार्य आज के दिन से आरंभ हो जाते हैं।

एक नवोदित राज्य होने के कारण छत्तीसगढ़ के विकास की अनंत संभावनाएँ हैं। छत्तीसगढ़ का प्राकृतिक वैभव एवं उसकी सांस्कृतिक धरोहर सचमुच ही अनूठी है। छत्तीसगढ़ की इस माटी का शृंगार हम सभी को मिलकर करना है। समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर किसी समृद्ध समाज की पहली पहचान है। छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत यह सिद्ध करती है कि हमारा राज्य सदियों से हर क्षेत्र में समृद्ध रहा है। हमारा दायित्व है कि हम अपनी इस अमूल्य धरोहर को अक्षुण्ण बनाए रखें। यह तभी संभव होगा जब समाज के लोग शिक्षित हों। हमें अपने राज्य की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक संपदा पर गर्व है।

अभ्यास

पाठ से

1. छत्तीसगढ़ के और क्या-क्या नाम हैं ?
2. कबीरपंथी किन्हें कहते हैं ? इनके मठों का प्रमुख कौन होता है ?
3. सतनाम का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसके प्रमुख सिद्धातों को लिखिए।
4. बारसूर के शिवमंदिर की विशेषताएँ लिखिए।
5. छत्तीसगढ़ के साहित्य में जिनका योगदान है, उन लेखकों, कवियों के नाम लिखिए।
6. छत्तीसगढ़ को आर्य और अनार्य संस्कृतियों का संगम स्थल कहा गया है। क्यों ?
7. विभिन्न राज्यों की सीमा से लगने वाले छत्तीसगढ़ राज्य के जिलों के नाम लिखिए।

पाठ से आगे

1. 'छत्तीसगढ़ का लोक जीवन उसकी संस्कृति में ही थिरकता है।' इस कथन को अपने अनुभव के आधार पर स्पष्ट करें।
2. छत्तीसगढ़ में मनाये जाने वाले तीज त्योहारों के विषय में घर के बड़े बुजर्गो से पूछकर लिखिए एवं यह भी लिखिए कि उस अवसर पर क्या-क्या होता है।
3. छत्तीसगढ़ को 'धान का कटोरा' कहा जाता है ऐसा कहे जाने के पीछे क्या कारण है? विचार कर लिखिए।

4L2K6Q

भाषा से

1. दो या दो से अधिक पदों का मेल समास कहलाता है। ये मुख्यतः छह प्रकार के हैं- अव्ययी भाव समास, बहुब्रीहि समास, तत्पुरुष समास, कर्मधारय समास, द्वंद्व समास और द्विगु समास।

जैसे– रामभक्त – राम का भक्त (तत्पुरुष समास)

रातदिन – रात और दिन (द्वंद्व समास)

नवरात्रि – नव रात्रियों का समूह (द्विगु समास)

यथाशक्ति – शक्ति के अनुसार (अव्ययीभाव समास)

नीलकमल – नीला कमल (कर्मधारय समास)

लंबोदर – लंबा है उदर जिसका अर्थात् गणेश (बहुब्रीहि समास)

निम्नलिखित शब्दों का समास–विग्रह कर, समास का नाम लिखिए –

राजपुत्र, दाल–रोटी, पंचवटी, दशानन, भरपेट।

2. **निम्नलिखित शब्दों का** संधि–विच्छेद कीजिए –

देशाभिमान, प्रेमानुराग, रमेश, कक्षानुशासन, सूर्योदय, गिरीश, धर्मावलंबी।

3. निम्नलिखित वाक्यों में 'काल' स्पष्ट कीजिए –

(i) भगवान विष्णु की एक चतुर्भुज प्रतिमा है ।

(ii) प्राचीन मंदिरों का निर्माण कलचुरीकाल में हुआ था ।

(iii) विकास की संभावनाएँ भविष्य में भी होंगी ।

(iv) गर्भगृह के प्रवेश द्वार के सामने शिवलिंग है ।

(v) छत्तीसगढ़ की प्राकृतिक समृद्धि दिखाई दे रही है ।

4. छत्तीसगढ़ के तीज–त्यौहारों का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

5. (छत्तीसगढ़ में विकास की संभावनाएं) विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. छत्तीसगढ़ी बोली के कहावतों का संकलन कीजिए एवं उनके अर्थ को शिक्षक के सहयोग से समझिए।

2. छत्तीसगढ़ में स्त्रियाँ (गाँव की) कौन–कौन–से आभूषण पहनती हैं। उनके चित्र एकत्र कीजिए एवं नाम भी लिखिए।

3. छत्तीसगढ़ में बोली जाने वाली बोलियों की क्षेत्र के आधार पर सूची तैयार कीजिए।